कपिल लामिछाने

वर्तमान में नेपाली लघुकथा

आरम्भ

'लघुकथा' साहित्य का नयी और लघुआयाम वाली, लघु आख्यानात्मक गद्यविधा है । यह कथा (यहाँ तात्पर्य 'कहानी' है) जैसी, पर लघुआयाम और चुस्त-दुरुस्त स्वरूप की होती है । 'कथा' के आगे विशेषणवाचक 'लघु' शब्द का योग होकर 'लघुकथा' शब्द बना है । कथा (यहाँ तात्पर्य 'कहानी' है) अंग्रेजी शॉर्ट स्टोरी' का समानार्थी शब्द है और इस अर्थ में 'लघुकथा' का समानार्थी शब्द 'शॉर्ट शॉर्ट स्टोरी' होगा । अतः लघुकथा को 'लघुतम कथा' कह सकते हैं । नेपाल और भारत में लघुकथा 'लघुतम कथा' के अर्थ में परिभाषित और स्थापित हो चली है । नेपाल और भारत के नेपाली भाषी लोग भी नेपाली में लघुकथा लेखन से जुडे हुए हैं । प्रस्तुत सन्दर्भ में नेपाली में लघुकथा का दशा वा अवस्था के बारे में अति सङ्क्षेप में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है ।

नेपाली में लघुकथा

नवीन विधा होने के नाते लघुकथा का इतिहास ज्यादा लम्बा नहीँ है । नेपाली में पहला गद्याख्यान 'गोर्खा वंशावली' (वि.सं. १८०० के आसपास) में 'सत्सङ्गको वर्णन भयाका कथाहा' और 'राज प्रपञ्चैको खिस्सा' (राज प्रपंच के किस्से) में मिलता है । शक्तिवल्लभ अर्ज्याल द्वारा अनूदित 'महाभारत विराटपर्व' (वि.सं. १८२७) है । यह लघुकथा, कथा और उपन्यास तीनों नहीँ है। फिर भी यह एक गद्याख्यान है । जे. ए. एटन का व्याकरण में समाविष्ट मुन्सी के 'तीन आहान' (वि. सं. १९७६) और रामकृष्ण वर्मा द्वारा संकलित 'गोर्खा हास्यमञ्जरी' (वि.सं. १९५२) की रचनाएँ भी लघुकथा के निकट हैं । कृष्णचन्द्र अर्ज्याल का 'लौकिक न्याय मणिमाला' (वि.सं. १९८०-८५) में कहावतें हैं । वे आख्यान नहीं है ।

पूर्णप्रसाद ब्राह्मण का 'झिल्का' (वि.सं. २००७) प्रकाशित पहला नेपाली लघुकथा संग्रह है । इसमें सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा दैनन्दिन जीवन के तमाम पहलुओँ को लघुकथा की अन्तर्वस्तु बनाया गया है । इसमें यथार्थवादी जीवन-दृष्टि है । इससे पहले धार्मिक तथा पौराणिक आख्यान, पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, ईसप नीतिकथा, अकबर वीरबल की कथाएँ आदि आख्यान में लघुकथा के बीज तो मिलते हैं, पर इनमें से कोई भी लघुकथा नहीँ हैं । अतः लघुकथा के सचेत प्रयोग का श्रेय पूर्णप्रसाद ब्राह्मण को ही जाता है । इसी काल में परशुराम रोका का 'पञ्चामृत' (सन् १९५०) दार्जिलिङ से प्रकाशित हुआ है ।

जयनारायण गिरी का 'कसिङ्गर' वि.सं. २००८ (सन् १९५१ अक्टूबर) में प्रकाशित हुआ । यह लघुकथा का दूसरा सफल प्रयास है । शशिकला शर्मा का 'उसको सुरुवाल' (वि.सं. २०१९) में पारिवारिक झगड़े, धार्मिक आडम्बर, सामाजिक मूल्यहीनता, जातीय भेदभाव, अभाव, अज्ञानता आदि विषयवस्तु हैं । इस रास्ते पर कई लघुकथाकार आगे आए हैं । उनमें से अनिता तुलाधर, दुर्लभलाल सिंह, लव गाउँले, जगदीश नेपाली, रत्न कोजू, विनयकुमार कसजू, रमेश नेपाली, हरिप्रसाद भण्डारी, आमोद भट्टराई, बालमुकुन्द खनाल, भागीरथी श्रेष्ठ, युद्धप्रसाद मिश्र, रामबहादुर बानियाँ क्षेत्री, ध्रुव मधिकर्मी, सुमन सौरभ, किशोर पहाड़ी, कपिल लामिछाने, पुष्कर्राज भट्ट, नारायण तिवारी, श्रीओम श्रेष्ठ, कृष्ण बजगाईं, खेमराज पोखरेल, विश्वराज अधिकारी आदि मुख्य हैं ।

इसी तरह श्यामगोपाल, परशु प्रधान, इन्दिरा प्रसाइँ, कृष्ण शाह 'यात्री', गोविन्द गिरी 'प्रेरणा', जगदीश घिमिरे, दिव्य गिरी, दिलीप शाह, नकुल सिलवाल, महेश प्रसाई, लक्ष्मण नेवटिया, विजय बजिमय, विदुर चालिसे, विजय चालिसे, अमर शाह, अशेष मल्ल, वनमाली निराकार, विधान आचार्य, विजय

सागर, भागीरथी श्रेष्ठ, नगेन्द्रराज शर्मा, हरिगोविन्द लुइँटेल, नवराज रिजाल, रामविक्रम थापा, रवीन्द्र समीर, वासु मार्मिक, कुमार केसी 'दुखी', विष्णु राई आदि लघुकथाकार सक्रिय रहे हैं ।

लघुकथा के क्षेत्र में कई नई चेहरे दिखे गए हैं । पोष चापागाईं, गायत्री चापागाईं, अगिब बनेपाली, कुसुम ज्ञवाली, अच्युत घिमिरे, टीकाराम रेग्मी, राजु क्षेत्री अपुरो, सुष्मा मानन्धर, शारदा पौडेल निशा, अल्पविराम पोखरेली, लता केसी, त्रिलोचन ढकाल, गङ्गा पौडेल कर्माचार्य, रासा, ईश्वरीप्रसाद पोख्रेल, आर.आर. चौलागाईं, गणेश नेपाली, कुसुमाकर शर्मा, प्रदीप प्रधान, राधा कार्की, रुद्र ज्ञवाली, षडानन्द पौड्याल, रामबहादुर पण्डित क्षेत्री, तुलसीहरि कोइराला, एकदेव अधिकारी, धनराज गिरी, गणेशकुमार पौडेल, दीपक लोहनी, रचना शर्मा, रञ्जन घिमिरे, शेखरकुमार श्रेष्ठ, विनोद नेपाल, सत्या अधिकारी, शेखर अर्याल, म्यामराज राई, कल्याण पन्त, किशन पौडेल, किरण आचार्य, शोभा शर्मा, त्रिपुरा पोखरेल खरेल, देवीप्रसाद थापा मामा आदि कुछ ऐसे ही नाम हैं । वि.सं. २०३३ (सन् 1966) में बिराटनगर से 'प्रयोग' छपा । यह लघुकथा का सामूहिक संग्रह है । इसके बाद भी ऐसे कई संग्रह छपते रहे हैं । नेपाली भाषा में लघुकथा लिखनेवाले वर्तमान में ऐसे करीब ५०० से अधिक लेखक हैं और करीब ४०० से अधिक लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुए हैं । यहाँ सभी लेखक और लघुकथा कृति का नाम लेना भी सम्भव नहीं; तथापि कतिपत प्रमुख लघुकथाकारों का नामोल्लेख अवश्य है ।

नेपाली लघुकथा में मानवमनोवृत्ति का सत्योत्घाटन करते हुए अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, शोषण, अमानवीयता, घरेलू समस्याएँ, बहुविवाह, प्रेम, सांस्कृतिक ह्रास, आर्थिक संकट और तज्जन्य पीड़ा आदि को लघुकथा की अन्तर्वस्तु बनाया गया है । लघुकथा में व्यंग्य का निस्सन्देह उच्च स्थान है । प्रगतिशील चेतना के साथ ही साइबर संस्कृति के कारण उत्पन्न अनाचार और बढ़ते हुए सम्बन्धविच्छेद को भी लघुकथा का विषय बनाया गया है ।

नेपाली लघुकथा और पत्र-पत्रिका

नेपाली लघुकथा को आगे बढ़ाने में पत्र-पत्रिका का बड़ा हाथ और साथ रहा है । वि.सं. २०३४ (सन् 1977) में विनय कसजू और विजय सागर के सम्पादन में 'चौतारो' हवाइ पत्रिका () प्रकाशित हुई। हरिभक्त कटुवाल के सम्पादन में 'बान्की' (वि.सं. २०२८/ सन् 1971), राजेन्द्र शलभ के सम्पादन में 'दुबो' (वि.सं. २०३९ / सन् 1982) प्रकाशित हुए । इसी रास्ते पर 'नागबेली', 'नवरत्न' (वि.सं. २०३४ / सन् 1977) जैसे कई लघुकथा प्रधान पत्रिकाएँ सामने आईं । गोविन्द गिरी 'प्रेरणा' के सम्पादन में 'लघुकथा' (वि.सं. २०४३-२०४४ / सन् 1986-87) के सिर्फ चार अंक प्रकाशित हुए । *गोरखापत्र, मधुपर्क, मिर्मिरे, नवप्रज्ञापन, समकालीन साहित्य, वनिता, अभिव्यक्ति, प्रसून, दायित्व, अक्षर* आदि कई पत्रिकाओं ने लघुकथा अंक व विशेषांक प्रकाशित करके लघुकथा के विकास में अपने-अपने हाथ बटाए। अभी भी कई पत्र-पत्रिका में लघुकथा का प्राथमिकता के साथ समावेश किया जा रहा है ।

लघुकथा पर प्राज्ञिक कार्य

नेपाली लघुकथा के विकास हेतु अनेक गोष्ठी, सेमिनार, सभा, सम्मेलन और अनुसन्धान भी हुए हैं । २०५३ (सन् 1996) में नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठन के आयोजन में धुलाबारी (झापा) में और २०६२ (सन् 2005) में साहित्य सन्ध्या के आयोजन में काठमाडौं में लघुकथा गोष्ठी हुई । इधर कई ऑनलाइन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । इनमें कार्यपत्र प्रस्तुति, टिप्पणी, विचारविमर्श होते आए हैं ।

हिन्दी लघुकथा और नेपाली लघुकथा के बारे में राजेन्द्र सुवेदी, मोहनराज शर्मा, दयाराम श्रेष्ठ, गोपाल अश्क, लक्ष्मणप्रसाद गौतम, कपिल लामिछाने, पुष्कर्राज भट्ट, हरिप्रसाद भण्डारी, विनय कसजु, विदुर चालिसे, ईश्वरीप्रसाद पोखरेल, कुमारप्रसाद कोइराला, लक्ष्मण अर्याल, शेखरकुमार श्रेष्ठ, देवी नेपाल आदि समालोचकों का योगदान स्मरणीय है ।

नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठान (काठमाडौँ), लघुकथा समाज (काठमाडौँ) और लघुकथा प्रतिष्ठान (पोखरा) ने लघुकथा के क्षेत्र में कई प्रशंसनीय कार्य किये हैं ।

नेपाली लघुकथा में शोध प्रारम्भिक चरण में है । ईश्वरीप्रसाद पोख्रेल ने वि.सं. २०६० (सन् 2003) में 'नेपाली लघुकथा परम्परा' शीर्षक से स्नातकोत्तर स्तरीय शोध (क्या यह एमफिल नहीं है) किया । नेपाली लघुकथा पर यह पहला शोध है । इसके बाद ऐसे अनेक स्नातकोत्तर शोध हो चुके हैं । कुछ एमफिल के शोधार्थियों ने भी नेपाली लघुकथा के ऊपर शोध किया है । (यदि है तो यहाँ ऐसा क्यों लिखा है) इसके अतिरिक्त पुष्कर्राज भट्ट और हरिप्रसाद भण्डारी ने क्रमशः 'नेपाली लघुकथा में युगचेतना' (सन् 2016) और 'नेपाली लघुकथा में व्यंग्य' (सन् 2023) विषय में विद्यावारिधि (पीएचडी) शोध सम्पन्न कर उपाधि प्राप्त की है ।

सामाजिक संजाल (सोशल मीडिया) में लघुकथा

लघुकथा के उन्नयन में सामाजिक संजालों की भूमिका सराहनीय है । खासकर कोरोना काल से । सामाजिक संजाल फेसबुक आदि के विभिन्न समूहों में हर रोज लघुकथा पोस्ट करना, वाचन होना, सुझाव आदान-प्रदान करना, समीक्षा करना सामान्य हो गया । बहुत-से सामान्य लोग भी लघुकथा पेजों पर श्रोता के रूप में जुड़ने लगे । ऐसा पहला पेज 'लघुकथा कुनो' है । वरिष्ठ लघुकथाकार नारायण तिवारीजी के अगुवाई में इस फेसबुक पेज की शुरुआत हुई । इसमें कई लोग जुड़े । डा. पुष्करकराज भट्ट ने वि.सं. २०७४ (सन् 2017) में 'आधुनिक नेपाली लघुकथा' नामक पेज की शुरुआत की। इसमें डा. हरिप्रसाद भण्डारी, डा. कपिल लामिछाने, लक्ष्मीप्रसाद पौडेल, रचना शर्मा सहभागी हुए । इस पेज ने हर दिन पोस्ट, हर हफ्ते लघुकथा का लाइव वाचन और लघुकथा प्रतियोगिता का आयोजन किया । राजन सिलवाल का 'लघुकथा संसार', घनश्याम डल्लाकोटी का 'नमस्ते आधुनिक लघुकथा मंच', रवीन्द्र समीर का 'समीर लघुकथा अभियान', दीपक समीप का 'बार्दली' भी खुले हुए थे । लता केसी ने वि.सं. २०७६ चैत्र ३ (सन् 2019) में 'हाम्रो लघुकथा पाठशाला' खोली जिसका परिमार्जित नाम अब 'हाम्रो लघुकथा केन्द्र नेपाल' पंजीकृत हो गया है। राजु क्षेत्री आदि अनेक लोग इससे जुड़ गए हैं । रोजाना शाम को एक घण्टे का लाइव वाचन और समीक्षा इस पर हो रही है । ऐसे ही त्रिपुरा पोखरेल 'खरेल' का 'सिक्किमेली लघुकथा समाज' (सिक्किम का लघुकथा समाज), नन्दलाल आचार्य का 'लघुकथा प्रतिष्ठान नेपाल' आदि सामाजिक संजाल संचालन में आए हैं । इनमें से कुछ बहुत सक्रिय हैं और कुछ कम सक्रिय । इसके कारण नेपाली में लघुकथा का लेखन, प्रस्तुति वा वाचन, समीक्षण के क्षेत्र में नव जागरण का संचार हुआ है । पाठक संख्या में विस्तार हुआ है । वर्चुअल माध्यम होने के कारण देश-विदेश के नए तथा पुराने अनेक लेखक इसमें जुड़े हुए हैं ।

लघुकथा का मंचन

लघुकथा का नाट्य रूपान्तरण कर मंचन भी हो रहा है । वि.स. २०६४ (सन् 2007) में नाटककार एवम् लघुकथाकार कृष्ण शाह 'यात्री' के लेखन और निर्देशन में 'पहिचानको खोजी' (पहचान की तलाश) लघुकथा मंचन हुआ । बाद में इस पंक्ति के लेखक का 'लोकतान्त्रिक ब'स' भी मंचित हुआ था । लघुकथा समाज और सर्वनाम नाट्य समूह के सहकार्य में नाट्य रूपान्तरण और मञ्चन का कार्य होता आया है । यह क्रम अब भी जारी है ।

अन्त में,

नेपाली लघुकथा की वर्तमान अवस्था सन्तोषजनक नजर आती है । वि.सं. २००७ (सन् 1950) साल में पूर्णप्रसाद ब्राह्मण का 'झिल्का' लघुकथा संग्रह से लघुकथा लेखन की औपचारिक शुरुआत हुई । तब से आज तक ४०० से अधिक लघुकथा संग्रह और हजारौँ फुटकर लघुकथाएँ प्रकाशित हुई हैं । पत्र-पत्रिकाओं ने लघुकथा विशेषांक प्रकाशित किए । लघुकथा के सिद्धान्त और नेपाली लघुकथा पर प्राज्ञिक बहस हुई हैं । लघुकथा सम्बन्धी सैद्धान्तिक पुस्तक तथा फुटकर लेख प्रकाशित हुए हैं । सामाजिक संजाल में विभिन्न पेजों पर लघुकथा सम्बन्धी अनेक क्रिया-कलाप हो रहे हैं। कई लघुकथाएँ पाठ्यपुस्तक का अंग बनी हैं । नेपाली लघुकथा सम्बन्धी कई तरह से अनुसन्धान हुए हैं । अतः अन्त में इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि नेपाली लघुकथा वर्तमान में समृद्धि की ओर अभिमुख है ।

ooo